नववर्षं भवेन्मंगलम्

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com
ISSN 2395-3055
जनवरी 2021 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

# संस्कृत-रत्नाकरः

## Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit research journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि०)
संस्कृत भवन, ए-10, कुतुब संस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली-110067

वर्ष : 7 अंक : 08 (80)

विश्वेपत्र समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

# संस्कृत-रत्नाकरः

## Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit research journal)

स्वामित्व : अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)

अध्यक्ष : प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय
अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

प्रधान संपादक (पदेन) : रमाकान्त गोस्वामी

संपादक : प्रो० शिवशङ्कर मिश्र

शोधपत्रपरीक्षक मण्डल : प्रो. केदार प्रसार परोहा (नई दिल्ली)
प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)
प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली)
प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी)
प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)

व्यवस्थापक मण्डल : आर.एन. वत्स 'एडवोकेट'
पं० हरिदत्त वशिष्ठ,एन.के. गोयल

ग्राफ़िक्स डिजाइनर : मनोज कुमार

संपादकीय कार्यालय : संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसिफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67

संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक : रमाकान्त गोस्वामी
महासचिव, अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

दूरभाष : 011-41552221 मो.-9818475418

*Website : aisanskritsahityasammelan.com*
*E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com*

संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए संस्कृत-रत्नाकरः जिम्मेदार नहीं है।

## विजय सूची

03 रामचरितमानस में सीताविवाह : स्रोत एवं सन्दर्भ
प्रो. रमाकान्त पाण्डेय

भारते भारती दीव्यतां सर्वदा 07
डॉ. कृपाशंकरमिश्रः

09 श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित कर्मयोग
प्रो. संगीता मिश्रा

13 डॉ. गोस्वामी गिरिधारी लाल शास्त्री द्वारा विरचित
फलित ज्योतिष-विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा

प्रो. किशोरचन्द्रमहापात्रकृते प्रणयप्रसादनमहाकाव्ये सांस्कृतिकं विवेचनम् 14
डॉ. कृपाशंकरमिश्रः

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 20)

## सम्पादकीयम्

### नास्ति भारतसमा भूमिः, न च वासन्तिकी विभा

प्रकृतेः शृङ्गारसाधनं विद्यते ऋतुवैभवम्। ऋतूनां प्राचुर्यप्रभावादेवास्माकं जीवनं निरामयमानन्दमयञ्चानुभूयते। यद्येक एव ऋतुस्स्यात्तर्हि जीवनं तथैव नीरसम् आनन्दशून्यञ्च भवेद्यथा एकमेव भोज्यपदार्थमनिशमश्नन् अस्माकं मनः नितान्तमुन्मनस्कं भवति।

वयमत्यन्तं सौभाग्यशालिनो यद् भगवतो महाकालस्य विद्यते अस्मासु महती कृपा। यत्र विश्वस्मिन् कश्मिंश्चिदंशे केवलं शैत्यम्, कश्मिंश्चिदंशे केवलमौष्ण्यम्, कश्मिंश्चिच्च देशे केवलं ब्राष्ट्यमेव दरीदृश्यते, तत्रैव भारतस्याङ्के सर्वेऽपि ऋतवः सानन्दं नरीनृत्यन्ति। अत्र षड्ऋतूनां वसन्त-ग्रीष्म-वर्षा-शरद्-हेमन्त-शिशिराणां विद्यते काचिद् रमणीया परम्परा। धन्योऽयं भारतो देशः षड्ऋतवो यत्र शोभन्ते।

मित्राणि! एवमपि देशाः श्रूयन्ते यत्र प्रातस्सन्ध्ययोर्भेदो न प्रतीयते, कदा रात्रिः कदा च दिवस इति घटिकायन्त्रं विना नावबुध्यते, कदा ऊषाकालः कदा च गोधूलिवेला इति नानुभवितुं शक्यते, घटिका एव बोधयति कदा प्रवर्तेरन् कदा च निवर्तेरन्। एवमपि आनुभविकमेव यदत्र देशे ऋतूनां समयगभावाद् तज्जन्यफलानामपि अन्नानाञ्च सौन्दर्यजनकपुष्पाणां च ऋतुजनितान्यपदार्थानाञ्च स्वाभाविको अभावः, तेन पूजादीनां विधानं, स्वास्थ्यसंरक्षणम् अन्यच्च यत् सुलभं सुखं तदुर्लभमिव प्रतिभाति। तदेव ऋतुमाहात्म्यं वर्णितं कालिदासेन-

सुभगसलिलावगाहः पाटलसंसर्गसुरभिवनवातः।
प्रच्छाय सुलभनिद्रा दिवसाः परिणाम रमणीयाः॥ (अभि.शा.)

अथ च बहुत्र वृष्टिबाहुल्येन जनाः स्वच्छ-धवल-नीलनभस्य दर्शनेन सर्वथा वञ्चिताः भवन्ति, किमधिकं केचन शैत्यपीडिताः, केचन निदाघभूर्जिताः, केचन च वृष्टिव्याकुलिताः विलोक्यन्ते। एवंविधानां का कथा सर्वजनमनोरंजकस्य वसन्तवैभवस्य।

वसन्ते सर्वविटपेषु नूतनमृदुपल्लवाः प्रादुर्भवन्ति। जीर्णपत्राणां विमोको भवति। उक्तञ्च-वसन्ते सर्वसस्यानां जायते पत्रशातनम् ततः तत्र नूतना सृष्टिः सञ्जायते। कालेऽस्मिन् वृक्ष-तरु-गुल्म-लताप्रभृतयो नितान्तं प्रमोदन्ते। शुक्ल-नील-पीत-रक्त-हरित-कपिश-चित्ररुपैश्चित्रितेयं धरित्री मानवानां चित्तमाहरति अपरिमितमाह्लादञ्च तेभ्यो प्रयच्छति। वसन्तस्य माहात्म्यं प्रतिपादयता भगवता श्रीकृष्णेन गीतायामुक्तम्-

मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः (गीता, 10.35)

वसन्तस्यामुमेव सौन्दर्यसारं विमृश्य महाकविः कालिदासः ऋतुसंहारनाम्नि ग्रन्थे सुललितैः पद्यैः एवं निरूपयति-

द्रुमाः सपुष्पाः सलिलं सपद्मं, स्त्रियः सकामाः पवनः सुगन्धिः।
सुखाः प्रदोषाः दिवसाश्च रम्याः, सर्वं प्रिये चारुतरं वसन्ते॥ (ऋतुसंहार)

अन्ते वसन्तोत्सवस्य हार्दिकं वर्धापनं विज्ञापयन् संस्कृतरत्नाकरस्य प्रस्तुतमङ्कं संस्कृतसमुपासकेभ्यः पाठकेभ्यः सादरं समर्प्य नितरां प्रमोदे।

**प्रो० शिवशङ्करमिश्रः**
शोधविभागाध्यक्षः,
लालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली

# श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित कर्मयोग

## एक अध्ययन

प्रो० संगीता मिश्रा
प्राचार्या,
राजकीय महाविद्यालय चिन्यालीसौड,
उत्तरकाशी (उत्तराखण्ड)

गीता को वैदिक संस्कृति का मूलतत्त्व कहा गया है तथा इस अमूल्य कृति में विश्व के सबसे पुरातन साहित्य वेदों के गहन मन्थन से प्राप्त उस अमृत का रूप प्रतिबिम्बित होता है, जो आत्मा का परमात्मा से, जीव का ब्रह्म से तथा असत्य का सत्य से साक्षात्कार कराने की दैवीय क्षमता रखता है। कुल 18 अध्यायों में विभक्त मात्र 700 श्लोकों द्वारा पूर्णता को प्राप्त इस महान् ग्रन्थ में कर्मयोग, ज्ञानयोग तथा भक्तियोग की त्रिवेणी के दर्शन होते हैं, जिसमें श्रद्धा एवं विश्वासपूर्ण अवगाहन से तीनों प्रकार के पापों से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा है 'गीता तो मेरा हृदय है।'

### गीता योगशास्त्र के रूप में

भगवद्गीता का रहस्य मुख्यतः योगविचार में ही निहित है। इसी कारण इस ग्रन्थ को योगशास्त्र कहा गया है। यह योग क्या है? इसका सूत्रपात कहाँ है। तथा इसका महत्त्व किस कारण से है? इन प्रश्नों का छोटा सा किन्तु सारगर्भित उत्तर मात्र इस कथन के माध्यम से मिल जाता है कि गीता में आत्मा और परमात्मा के अक्षुण्य सम्बन्ध का वर्णन है, जीव और ब्रह्म के शाश्वत मिलन का सिद्धान्त इसमें निहित है तथा सत्-असत् के समन्वय का नवीन एवं चिरपरिचित रूप इसमें दृष्टिगोचर होता है। इस योग शास्त्र में कर्म, भक्ति तथा ज्ञान की त्रिवेणी प्रवाहित है जिन्हें क्रमशः कर्मयोग, भक्तियोग तथा ज्ञानयोग का नाम दिया गया है। विभिन्न आचार्यों ने अपने चिन्तन के आधार पर गीता में भिन्न-भिन्न अवधारणाओं को मूर्त रूप दिया है। स्वामी शंकराचार्य जो निवृत्ति मार्ग के पोषक थे, ने स्पष्टतः इसमें ज्ञानयोग का दर्शन किया है। दूसरी ओर उस ब्रह्म में भक्तिभाव की मानसिकता से अभिसिक्त स्वामी रामानुजाचार्य ने उसकी प्राप्ति का एक मात्र साधन उसके प्रति भक्ति भावना को ही माना है। लोकमान्य तिलक जैसे विद्वानों ने भगवद् प्राप्ति के साधन के रूप में कर्मयोग को प्रधानता दिया है। वैसे इन तीनों मार्गों का वर्णन अधिकतर शास्त्रों में पृथक् रूप से मिलता है किन्तु गीता में तीनों योगों के अलग-अलग वर्णन के साथ तीनों का सुखद समन्वय है और यही गीता की विशेषता है। गीता में योग को ब्रह्म की प्राप्ति का साधन माना गया है। वह साध्य नहीं है। कर्म-भक्ति-ज्ञान ये तीनों मार्ग ब्रह्म प्राप्ति के अलग-अलग साधन हो सकते हैं। इन तीनों मार्गों में से किसी एक के भी माध्यम से आत्मा तथा परमात्मा का मिलन संभव हो सकता है। गीता उस ब्रह्मरूपी परमतत्त्व की प्राप्ति के उपरोक्त तीन साधनों का उद्घोष करती है। इन साधनों में से भगवान् की प्राप्ति हेतु किसी एक को भी अपनाया जा सकता है। तीनों समान रूप से महत्त्वपूर्ण हैं न किसी की महत्ता दूसरे से कम है और न ही अधिक है। जिसको जो मार्ग